अनेक 8-8-68 ओम शान्तिः रात्री क्लास

अनेक प्रकार की पुआईन्टस बच्चों की बुधी मे रहती है। सिष्टी की आः मः अः को तुम बच्चे जानते हो। यह समझा सकते हो कि हम परमपिता परमात्मा के जीवन चरित्र वा बायोग्राफी को जानते है। कोई कोई क्या समझा सकेंगे। कहेंगे सर्वव्यापी है। सो कोई बायोग्रफी थोडी ही हुई। जैसे नेहरु की बायोग्रफी को कोई पूछे और कहो कि सर्वव्यापी है जो बायोग्राफी नही हुई। सपन्न मे भी समझा सकते है। ऊच ते ऊंच भगवान है जिसको ही परमपिता परमात्मा शिव कहा जाता है। उनकी बायोग्रफी को हम जानते है। दुनियां मे तो सभी सर्वव्यापी कह देते हैं। अच्छा उनके बाद फिर है ल०ना० उनके 84 जन्मो को हम समझा सकते हैं। फिर राम सीता के भी बायोग्राफी बता सकते हैं। यह दुनिया नहीं जानती है। राजाओं आद को तो सभी जानते हैं। अच्छा कोई पूछे प्रजापिता ब्रह्मा जिसको एडम भी कहते हैं। तो तुम कहेंगे हम उनकी भी जीवनकहानी बता सकते हैं। सो भी न एक जन्म की परन्तु 84 जन्मों का। काली का भी बता सकते हैं। जगदम्बा काली एक ही है। उन सभी की बायोग्राफी तुम ही जानते हो। सभी हैं 84 जन्म वाले। 84 लाख जन्म तो होते ही नहीं हैं। त्रिमूर्ति ब्रह्मा बिष्णु शंकर की बायोग्राफी को भी हम जानते हैं। सो भी न सिर्फ एक जन्म की बल्कि उनके 84 जन्मों की बायोग्राफी को बता सकते हैं। मुख्य है ही भारत की बात। बाप भारत में ही आकर रचयिता और रचना के आदि मध्य अन्त का राज़ बताते हैं। और धर्म कैसे आते हैं वह भी हम समझा सकते हैं। त्रिमूर्ति और गोला बड़ा ही अच्छा है। आधा कल्प तो है एक धर्म। इन बातों का सारी दुनिया के मनुष्य मात्र को पता नहीं है। क्राईस्ट क्रिश्चन का बाईबुल ही सुनावेंगे। और क्या सुनावेंगे। तुम बच्चों की बुधि में तो सभी बातें हैं। तुम समझा सकते हो हम रचयिता और रचना को जानते हैं। इसलिए आस्तिक हैं। दुनियामें कोई भी नहीं जानते हैं। ऐसे2 समझा सकते हो। भाषण मे भी लिख सकते हो। ऋषि मुनि आदि परमात्मा को और उनकी रचना के आदि मध्य अन्त को नहीं जानते हैं। थे। हम बता सकते हैं। अर्थात हम सभी समझा सकते हैं। आज से 5000 वर्ष पहले उन देवी-देवताओं का राज्य था। हम समझा सकते हैं। तुम्हारी बुधि में सारा ज्ञान होना चाहिए ना। यह को कठिन नहीं है। तुम लिख सकते हो। लिखते2 तुम्हारी वाणी खुल जावेगी। यह लिख देना चाहिए हम हम परमपिता परमात्मा और रचना के आदि मध्य अन्त को जानते हैं। यह समझानी एक ही बार बाप द्वारा मिलती है। तो यह नालेज तुम्हारी बुधि में सदैव रहनी चाहिए। नालेज तो बहुत ही सहज है। बाकी मुश्किल बात है बाप को याद करने की। तुम यह भी समझा सकते हो कि सतयुग पावन दुनिया फिर तमोप्रधान पतित कैसे बनती है 84 जन्म लगते हैं। फिर एक ही जन्म में सतोप्रधान कैसे बन सकती हैं। बाकी मुख्य बात है याद की यात्रा की। अपवित्र बने तो गिर पड़ेंगे। पवित्र जरूर बनना है। बताना है अगर गाडली युनिवर्सिटी में यह शिक्षा मिलती हैं। लिख भी सकते हैं गाडली स्पीचुअल युनिवर्सिटी। रचयिता स्पीचुअल गाडफादर द्वारा रचयिता और रचना के आदि मध्य अन्त का नालेज पढ़ रहे हैं। जो नहीं जानते हैं उनको नास्तिक कहा जाता हैं। जानने वाले को आस्तिक कहा जाता हैं। यह सभी पायन्टस निकालनी चाहिए भाषण में। तुम बहुत कुछ समझा सकते हो। कह सकते हो कि ऐसे कोई समझा नही सकते हैं। न कोई शास्त्रों आदि में ही है। हम यह सभी पढ़े हैं। यह बाप ही खुद देते हैं। फिर यह प्रायः लोप हो जाता हैं। फिर तो नालेज ही दरकार ही नहीं रहती है। ऐसे ऐसे पायन्टस भी बहुत हैं समझने की। बडी बात है कि बच्चे खुद ही कहते हैं हम सतोप्रधान नहीं बन सकते हैं। मुख्य बात है बैटरी चार्ज करने की। बुलाते हैं बाबा आकर पावन बनाओ। बैटरी चार्ज करो। और किसको तो पता ही नहीं हैं। यह बाप की ही डियुटी है। सुखधाम शान्ति धाम का वरसा देना। बाकी वह सभी हैं भक्ति मार्ग के गुरु। ज्ञानमार्ग का गुरु होता ही नहीं। इस समय यह है सद्गुरु का द्वार। जो तुमको बैठ आत्मा बनाते हैं। इस समय तुम कहेंगे हमको सतगुरु पढ़ाते हैं। ज्ञानमार्ग में होता ही है एक सद्गुरु। सिक्खलोग कहते हैं सद्गुरु अकाल .. अर्थ यह नहीं समझते हैं। तुम जानते हो। सद्गुरु ही सत्य बोलते हैं। बाकी झूठे गुरु तो सभी करते रहते हैं। सबसे बड़ा झूठ बोलते हैं ईश्वर सर्वव्यापी है। बाप बच्चों को अर्थ सहित नमस्ते करते क्योंकि तुमको अपने से भी ऊंच बनाते हैं। खुद तो ब्रह्माण्ड के ही मालिक हैं। तुम तो विश्व और ब्रह्माण्ड के मालिक बनते हो। तब तुमको नमस्ते करते हैं। यह जानते हो सभी विश्व के मालिक नहीं बनते हैं। अच्छा गु